# पं. मधुसूदन ओझा के मत में देव एवं असुर

**देवर्षि कलानाथ शास्त्री**

**(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक** ''भारती''संस्कृत मासिक
**पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ** - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
**पूर्व अध्यक्ष** - राजस्थान संस्कृत अकादमी
**आधुनिक संस्कृत पीठ** - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
**पूर्व निदेशक** - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
**सदस्य** - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

ओझा जी ने देव, असुर, मनुष्य आदि का स्वरूप तथा देवासुरसंग्राम का रहस्य बताते हुए इस प्रकार के सूत्र दे दिये है, जिनसे सभी वैदिक उल्लेख स्पष्ट हो जाएँ। जिस प्रकार उन्होंने आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक तीन विभागों द्वारा त्रैलोक्य को समझाया है, जिसे दिव्य शारीर और भौम कहा है (जिनके स्वामी अग्नि, वायु और इन्द्र को बताया है) उसी प्रकार देवासुरों का भी विभाजन किया है। उनके सूत्र हैं -

**अखिला नराः पुरात्वे त्रेधा भिन्नाः प्रधानतो ह्यभवन्।**
**देवा अथ च मनुष्या देवविरोधात् त्वदेवाश्च ।।**
**अत्युन्नतविज्ञानाः प्रभाववन्तोऽभवन् देवाः ।**
**विज्ञानदुर्बला अपि बहुलप्रज्ञा महाबला असुराः।।**
**साधारणी तु जनता मनुष्यनाम्ना प्रतीताऽऽसीत्।**
**तत्रादेवा आसन् दानव-दैत्याश्च दस्यवः पणयः।।**
**अफ्रीकाद्या देशा दैत्यानां दानवानां च।**
**फीनीशिया पणीनां दस्यूनां हेमकूटाद्याः।।**
**वेदग्रन्थे कथिताः समराः सर्वेऽपि पंचभेदाः स्युः।**
**देवानां तैः पणिभिर्दानव-दैत्यैश्च दस्युभिश्चार्यै :।।**
**देवाः आर्यैः दासैः पणिभिर्गोष्वद्रिसोमके दैत्यैः।**
**क्षित्यर्थे दानवकैरायुयुधुः प्रकीर्ण-विषयेषु ।।**[1]

इससे स्पष्ट होता है कि नरों के ही तीन विभाग थे। देव, मनुष्य और अदेव। अत्यन्त उत्कृष्ट मेधा और विज्ञान वाली

जाति देव कही गई। उत्कृष्ट बुद्धि किन्तु कमजोर विज्ञान वाले असुर हुए जो बलशाली थे। अदेवों में चार प्रकार की जातियाँ थीं - दैत्य, दानव, दस्यु और पणि। वेदों में जो संग्राम वर्णित हैं, वे पणियों दानवों दैत्यों दस्युओं और आर्यों से हुए थे। वे किस उद्देश्य से हुए थे, इन सबको स्पष्ट करते हुए उन्होनें बताया है, कि दासराजाओं से सूर्य विज्ञान के सिलसिले में देवों का युद्ध हुआ, गायों के लिए पणियों से, सोम के लिए दैत्यों से, पृथ्वी के लिए दैत्यों और दानवों से युद्ध हुआ।

कुछ अन्य कारणों से आर्यों से भी देवों के युद्ध हुए थे। देवेन्द्र स्वयं ऐसे अवसरों पर सेनाओं का नेतृत्व करते थे और युद्ध में विजयी होते थे। ओझा जी ने इन युद्धों में इन्द्र की विजय का इतिहास इन्द्रविजय में वर्णित किया है। उसी प्रसंग में उसी भू-भाग से जिसे ओझा जी स्वर्ग कहते हैं इन्द्र का भारत में आगमन, दस्युओं का निग्रह तथा उनका साथ देने वाले राजाओं पर विजय आदि इसमें विस्तार से वर्णित किया है। इन इतिहासों में इन्द्र के वे सारे वर्णन समाहित हो जाते हैं, जिनसे अध्येता दिग्भ्रांत हो जाते थे। इन्द्र और वृत्र के संग्राम को जहाँ आधिदैविक स्तर पर ओझा जी ने विज्ञान के तत्वों को अंतःक्रिया के रूप में समझाया है, वहीं इतिहास के स्तर पर भी उसका निर्वचन करते हुए आख्यान को स्पष्ट किया है। वृत्र को नागवंशी राजा बताया है, जिसने बड़ी-बड़ी पहाड़ी चट्टानों से नदियों को रोक कर बाँध बना दिया था। इन्द्र ने उसे मारा, चट्टानों को तोड़ा, जिससे नदियों का जल फिर बहने लगा। यही रहस्य है साँप के रूप में नागवंशी वृत्र के वैदिक स्वरूप का तथा इन्द्र द्वारा पर्वतों के पंख काटने का।

इसी प्रकार ऋग्वेद के दाशराज युद्ध के आख्यानों का समन्वय भी उन्होंने 'इन्द्र-विजय' में कर दिया है। इसे अधिकांशतः दास राजा से युद्ध के रूप में देखा है, उन्होनें संजय के पुत्र दिवोदास अतिथिगव को जब शंबरासुर ने सताया तो किस प्रकार इन्द्र ने महासमर में उसका वध करवाया और 100 पुरियों का नाश किया, इसका इतिहास वर्णित करते हुए उन्होंने इन्द्र का पुरंदर नाम, शंबरारि नाम आदि की सार्थकता बताते हुए युद्धों के आख्यान व्याख्यात किये हैं। चूँकि यज्ञ ऋषियों के ज्ञानसत्र, वैज्ञानिक प्रयोग, सेमिनार आदि की तरह आयोजित समारोह होते थे, उनमें सम्राटों को भी बुलाया जाता था। यही थी आहुति याने बुलावा। आहुति को आहूति मानने का संकेत ब्राह्मणों में मिलता है। इन्द्रादि देव आते थे, सोम पीते थे, उनका अभिनन्दन होता था। ऋषि लोग अभिनन्दन पत्र पढ़ते थे यही थे उनके सूक्त। ऋषियों के शास्त्रार्थ, संवाद इसी प्राचीन इतिहास के अंग हैं। इन्द्र को भूस्वर्ग से (जो भारत के सुदूर उत्तर में था) यहाँ आने पर कहाँ ठहराया गया, उसकी क्या खातिर की गई इसका वर्णन भी वैदिक सूक्तों में है। इसे इतिहास के रूप में विवेचित करना शेष था, जो ओझा जी ने किया है।

**सन्दर्भ -**

१. देवासुरख्याति - पृ. ८८